



आनंद बहादुर की कहानियों में यथार्थवाद

मंजूदेवी कोचे, शोधार्थी, हिंदी विभाग

शासकीय दू.ब. महिला महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सविता मिश्रा, पीएच-डी, शोध निर्देशक, पूर्व प्राचार्य

शासकीय राजीव लोचन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजिम, गरियाबंद, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE



Authors

मंजूदेवी कोचे, शोधार्थी
सविता मिश्रा, पीएच-डी, शोध निर्देशक
E-mail : manju.koche@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 05/07/2026
Revised on : 06/09/2026
Accepted on : 15/09/2026
Overall Similarity : 00% on 07/09/2026



Plagiarism Checker X - Report

Originality Assessment

0%

Overall Similarity

Date: Sep 7, 2026 (07:18 AM)
Matches: 0 / 2917 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found,
your document looks healthy.

Verify Report:
Scan this QR Code



शोध सार

बिहार के देवघर में जन्में पेशे से अंग्रेजी के प्राध्यापक आनंद बहादुर आधुनिक युग के मुक्कमल कवि, कथाकार और गजलकार हैं। पिता देवघर में हिन्दी के प्राध्यापक थे, जिससे हिन्दी साहित्य के प्रति बचपन से ही उनमें गहरी रुचि रही है। साहित्यिक संगोष्ठियों में सम्मिलित होना, साहित्य की पुस्तकें पढ़ना, आसपास की घटनाओं को गहराई से देखना और उन्हें कलमबद्ध करना बहुत पहले ही शुरू कर दिया था। उनकी कहानियों में एक अलग खोज नजर आती है, वे आम जन से जुड़ती हैं। इनमें एक तरह का विद्रोह भी है। यह मनुष्य के अंतःकरण और अंधविश्वास पर मनोवैज्ञानिक चिंतन करती है। उनकी कहानी संग्रह 'ढेला और अन्य कहानियाँ' एवं 'बिसात' में संग्रहित कहानियाँ नगरीय और कस्बाई जीवन के आसपास बिखरे हैं। इनमें नगरीय जीवन की विसंगतियों व संघर्ष हैं। यथार्थ के धरातल पर रची उनकी कहानियाँ आम आदमी की आवाज बनती है। उनकी पीड़ा, अभाव, उपेक्षा, को प्रकट करती हैं।

मुख्य शब्द

कहानी, समाज, साहित्य, संवेदना, रहस्यवादिता.

'ढेला और अन्य कहानियाँ' (2020) संग्रह की कहानियाँ विषय वैविध्य से पूर्ण हैं। वास्तविक जीवन के रोजमर्रा की जिन्दगी को इन कहानियों में देखा जा सकता है। इनमें मनुष्य का संघर्ष और जुझारूपन है। इस संग्रह की कहानी 'ढेला' यह शब्द सुनने में बहुत साधारण सा मिट्टी का टुकड़ा है। परन्तु वह ईंट का साधारण सा एक टुकड़ा स्कूटर चालक के मन में मनोवैज्ञानिक खलल पैदा करता है। कहानी में कथाकार ने भारतीय रहन-सहन, मान्यताओं, अंधविश्वास को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। इनमें साधारण जन समुदाय में प्रचलित मिथ और रहस्यवादिता को समझा जा सकता है। 'ढेला' कहानी महानगरीय जीवन का यथार्थ प्रस्तुत करती है। इसमें महानगरों

में बसने वाले कस्बाई जीवन और उनके मध्य संघर्ष करते निम्न एवं मध्यवर्गीय लोगों का बिम्ब है साथ ही धार्मिक मान्यताओं एवं अंधविश्वासों की मौजूदगी इनमें साफ-तौर पर देखा जा सकता है।

‘ढेला’ में आनंद बहादुर ने महानगरीय जीवन की आपाधापी को व्यक्त किया है; जिसमें रोजाना सफर लंबा होता है। महानगर की भीड़-भाड़, धूल, गंदगी और अव्यवस्था के कारण यह सफर कहीं अधिक लंबा हो जाता है। कभी कई किमी. तक गाड़ियों, दोपहियों इत्यादि की लंबी कतारें लग जाती हैं। ऐसे में लोग कोई शार्टकट अपना ही लेते हैं। छोटे शहरों या कस्बों में रहने वाले लोगों को खुली जगहें और हरियाली बड़े शहरों की अपेक्षा मिल ही जाती हैं। स्कूटर चालक छोटे कस्बाई शहर से बड़े महानगर में नौकरी करने आता है। भीड़ से बचने और कुछ सेकेंड की बचत करने के लिए वह अक्सर मैदान में बनी पगडंडी से अपनी स्कूटर से आता-जाता है। एक ईंट के टुकड़े से वह आशंकित होता है और अंधविश्वास को भी मानने लगता है। एक चायवाले की बातों में आकर टोपाज जड़ित अंगूठी पहनता है। यह हमारे समाज के ऐसे यथार्थ को प्रकट करता है जहाँ पढ़े-लिखे, शिक्षित और सम्य माने जाने वाले लोग भी अंधविश्वास जैसी चीजों पर विश्वास करते हैं।

‘साइनबोर्ड’ में कथाकार आनंद बहादुर ने कामता प्रसाद नामक पात्र के माध्यम से मध्यवर्गीय जीवन का चित्र प्रस्तुत किया है। एक नौकरी पेशा व्यक्ति अपने जीवन के शौक को किसी संदूक में बंद कर सहेज कर किसी कोने या घर के छज्जे में संभालकर किसी पुरानी धरोहर की तरह रख देता है। कामता प्रसाद ने भी अपने और परिवार को बड़ी किफायत से रखा। केवल अपने बड़े मकान का शौक पूरा करने के लिए। कामताशंकर अपनी व्यथा एवं मकान बनवाने के प्रति समर्पण को अपने मित्र द्वारका प्रसाद से कहते हैं—“ अपनी पत्नी के कंगन बेचकर जमीन का वह टुकड़ा रजिस्ट्री करवाया था फिर अथक जोड़-तोड़ कर उन दिनों रहने के लिए उन्होंने हर प्रकार की खपत में कटौती की थी। बच्चों की ट्यूशन बंद कर दी गयी थी और खुद वे ऑफिस जाने के पहले तथा वहाँ से आने के बाद बैठकर उन्हें पढ़ाया करते थे। सारा परिवार दूध के बदले नींबू की चाय पीने लगा था और वे खुद तो बिना शक्कर वाली काली चाय ही पसंद करने लगे थे।”

कामता बाबू का पूरा जीवन ही एक मकान यज्ञ था। मध्यवर्गीय जीवन जीने वाले सामान्य लोगों की जिन्दगी; जीवन की आपाधापी में गुजरती है। जहाँ उसे अपने और परिवार की छोटी-छोटी जरूरतों के लिए कठोर तप एवं श्रम करना पड़ता है। पसंदीदा सामान, कपड़े, खिलौने और स्वाद के आनंद से दो-चार होना पड़ता है। कामता बाबू के संबंध में आनंद बहादुर लिखते हैं— “ यह सब करने के लिए उन्हें और उनके परिवार को क्या-क्या पापड़ बेलने पड़े, यह उस समय उनकी जान-पहचान वालों में एक किंवदंती बन चुका था। जो बीवी-बच्चों के खर्चों की खिचखिच से खुन्ना जाते, वे प्रायः ताना मारते सुने जा सकते थे कि देखा कामताबाबू को आचार और सूखी रोटी खा-खाकर कैसा तिमंजिला ठोक लिये और तुम लोग हो कि.....”²

कथाकार आनंद बहादुर ने मध्यवर्गीय जीवन को बहुत करीब से उभारने का प्रयास किया है। बड़े मकानों में अक्सर मतभेद उत्पन्न हो ही जाते हैं कुछ ऐसा ही कामता बाबू के घर में ही उनके उस तिमंजिला मकान में ‘साइनबोर्ड’ लगाने के लिए होता है। कामताबाबू की चारों संतान अपने-अपने नाम और व्यवसाय का साइनबोर्ड लगाना चाहते हैं। यह कहानी भारतीय समाज और परिवारों के यथार्थ से जुड़ी है। कहानी बाजारवाद को भी प्रस्तुत किया गया है। मनुष्य केवल व्यवसाय करना चाहता है ईमानदारी, दया, प्रेम, सहिष्णुता जैसे मूल्य किताबों में बंद होकर रह जायेंगे। कामताशंकर के पड़ोस में रहने वाले डॉक्टर ने घर पर इसीजी मशीन का साइनबोर्ड लगाया जिस पर वे कहते हैं—“ आज कोई डॉक्टर एक सेकण्ड के लिए भी क्लिनिकल चेकअप नहीं करना चाहता। बस, जैसे ही इनके पास जाओ, ये लोग आनन-फानन में ढेर सारा चेकअप लिख देते हैं। फिर जॉच का पुर्जा पढ़कर दवाई लिख देते हैं वो भी नहीं, जो इनके एम.आर. इन्हें बता जाते हैं। बदले में दवा कंपनियाँ इन्हें पैसा और कीमती उपहार देती हैं। कोई डॉक्टर है ये?”³

आनंद बहादुर की कहानी ‘साइनबोर्ड’ आधुनिक समाज का चित्रण करती है। आधुनिक युग में मनुष्य अपनी जड़ों से उखड़ता चला जा रहा है। महानगरीय जीवन शैली और चकाचौंध भरी भैतिकता में वास्तविकता से कोसों दूर हो रहा है। गाँव की धरती, शुद्ध हवा, पेड़-पौधे, जल, पशु-पक्षी, रीति-रीवाज एवं परंपराएँ अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत हैं। बढ़ते बाजारवाद, प्रतियोगिता और आगे बढ़ने की होड़ में मानवीय संवेदना शून्यता की ओर है। अर्थात् जन को ध्येय बनाकर चलने वाली अनेक संस्थाएँ आज सक्रिय हो गयी हैं।

आनंद बहादुर की कहानी ‘लोहा’ में कथाकार ने आतंकवाद जैसी भयावह समस्या पर दृष्टिपात की है। आज समूचा विश्व बड़े स्तर पर आतंकवाद की लड़ाई लड़ रहा है। विश्व में तेजी से आतंकवाद पैर पसार रहा है। यह किसी भी राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा के लिए घातक है। असमाजिक तत्वों की विद्यमानता, अतिधार्मिकता, अंधविश्वास, सामाजिक-आर्थिक विसंगतियों आदि

इसके पनपने के प्रमुख कारणों में शुमार है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी के विकास ने मानव को सुलभ सुविधाएँ प्रदान की हैं। भौतिक साधनों के विकास के साथ ही उसके दुष्प्रभाव भी गंभीर हैं। सोशल मीडिया ने इस दिशा में कहीं अधिक प्रगति की है। इंटरनेट की सुविधा ने आतंकवाद को बढ़ावा देने के साथ प्रसारित भी किया है। 'लोहा' कहानी में इसकी भयावहता को कथाकार लिखते हैं—“ सड़क पार चाय की दुकान में बैठे एक कुख्यात गुंडे को किसी ने बम से उड़ा दिया। बम मारने वाला लुंगी-बनियान पहने हुए था। वह पैदल चलता, निरीह और कातर लगता हुआ आया। दुकान के सामने पहुँचकर उसने अपने झोले में से आलू सरीखी कोई चीज निकाली और गुंडे के पेट में फुर्ती से दे मारी। आलू 'धड़ाके' के साथ पेट के अंदर समा गया। पेट पके कटहल की तरह फट कर खिल उठा। अंतड़ियाँ झुलस कर कबाब बन गयीं। उनमें सैकड़ों छोटी-छोटी कॉटिर्साँ पिरोई हुई थीं जो एक पल के लिए सुर्ख लाल दमक कर स्याह हो गयी।”⁴

कहानी में कथाकार ने समाज के ऐसे यथार्थ को चित्रित किया है जो वर्तमान में एक गंभीर समस्या है। 'लोहा' कहानी को पढ़ते समय पाठक उस यथार्थ को अपने आसपास अनुभूत कर सकते हैं। यदा-कदा समाचार-पत्रों, समाचार बुलेटिनों, सोशल मीडिया में ऐसी अनेक खबरें व घटनाएँ आम बात हो गयीं हैं कि फलों जगह में बम के धमाके हुए या आतंकवादी घटनाओं को अंजाम दिया गया। कहानी को पढ़ते समय बम की भयावहता का पता चलता है, जब बम के चपेट में आया व्यक्ति निरीह होकर मदद की गुहार लगाता है परन्तु कोई उसे पानी पिलाने को तैयार नहीं होता।

साम्राज्यवाद, धार्मिकता, पंथवाद इत्सादि दुष्प्रभावों ने मानव को कठोर और निष्ठुर बना दिया है। जहाँ मरते हुए घायल असहाय व्यक्ति की पुकार को अनसुना कर दिया जाता है। मरती मानवता की तस्वीरें दिख ही जाती हैं। सड़क दुर्घटना या हिंसा जैसी वारदातों में घायल व्यक्ति के इर्द-गिर्द भीड़ जमा रहेगी परन्तु सहायता करने वाले हाथों की जगह उनके चित्र और विडियो बनाते लोग बड़ी संख्या में मौजूद रहेंगे। जब तक कोई ऐसा व्यक्ति जो निःस्वार्थ सेवा की भावना से आता है। तब तक बहुत देर हो जाती है। ऐसे वाक्ये आये दिन देखे जा सकते हैं। आनंद बहादुर कहानी में लिखते हैं—“ उधर वह आदमी जिसे बम लगा था, 'पानी-पानी' कराहता हुआ छटपटा रहा था। सारी सड़क वीरान पड़ी थी। मरते आदमी के मूँह में जल कौन डालता ? यह देख मैंझले ने पानी भरा जग उठाया और दरवाजा खोलने को तत्पर हुआ, मगर तभी उसने पाया कि किसी ने उसे पीछे से जकड़ लिया है। 'क्या करते हो!'"⁵

कहानी में आनंद बहादुर ने निष्ठुर होते समाज का चेहरा स्पष्ट किया है। जहाँ मूल्य और मानवता शर्मसार हो रही है। भारतीय समाज की व्यवस्था में जाति एवं वर्ग भेद बहुत बड़ी विसंगति के रूप में उपस्थित है। जाति व्यवस्था ने मनुष्यों के मध्य ऊँची दीवार कायम की है जिसे तोड़ पाना कठिन है। राजनीतिक पार्टियों अपने हित साधन और वोट बैंक के लिए जातिवाद को केन्द्र में रखते हैं। ऐसे ही वर्ग भेद को व्यक्त करती उनकी कहानी 'दूध और पत्थर' को देखा जा सकता है। कहानी की पात्र अमृता ने हाल ही में बच्चे को जन्म दिया है जिससे उसके स्तनों में दूध की अधिक मात्रा स्रावित हो रही है। अमृता अपने अत्याधिक दूध बनने की समस्या से परेशान होकर दूध के कसाव को कम करने के लिए डॉक्टर एवं तमाम तरह के तरीके अपनाती है, परन्तु कोई भी कारगर समाधान नहीं हो पाता ऐसे में उसके पति ने सुझाव दिया कि उनके घर काम करने वाली महरी के बेटे 'सिबुआ' को अपना दूध पिला दे। सिबुआ का नाम सुनते ही अमृता क्रोधित हो जाती है और कहती है—“ पागल हो गये हो क्या? उस गंदे, लिजलिजे, जात-कुजात की औलाद को अपना दूध पिलाऊँ, फिर वही जूठा दूध अपनी बीना पीयेगी। मुझे समझ क्या रखा है?"⁶

अमृता को अपने आस-पड़ोस के कुलीन बच्चों को दूध पिलाने में कोई हर्ज नहीं है परन्तु एक महरी के बच्चे को दूध पिलाना उसके कुलीनता के लिए अभिशाप की तरह है। यह ऐसा यथार्थ है जिससे शिक्षित समाज भी अछूता नहीं है। सिबुआ जो एक अबोध बालक है उसके प्रति घृणा की भावना वर्ग भेद को व्यक्त करता है। अमृता और सुभाष के संवाद को आनंद बहादुर कहते हैं—“ सिबुआ का नाम तुमने ऐसे लिया मानों कोई वह लिजलिजा कीड़ा हो। कुछ देर तक तो कोई कुछ नहीं बोला, फिर सुभाष बुदबुदाया....मैंने गरीब का जो दूध पिया था, वह न तो गंदा था, न काला। हमारे परिवार के सम्मान पर भी कोई आँच नहीं आयी थी....”⁷ जाति भेद केवल अशिक्षित व निम्न वर्ग में विद्यमान नहीं है बल्कि उच्च और अभिज्यात्य वर्ग में नीची जाति के लोगों को हेय की दृष्टि से देखा जाता है। यह ऐसी विडंबना है जो गाँव से महानगरों तक बनी हुई है।

आनंद बहादुर का कहानी संग्रह 'बिसात' की कहानियाँ मानव एवं समाज से जुड़ती हैं। 'एक काली लड़की का लव जिहाद' कहानी रंगभेद पर आधारित है। कहानी समाज के उस चेहरे को व्यक्त करती है जहाँ किसी लड़की के सभी गुण उसके गोरे रंग से आँक लिया जाता है। वहीं सारे दुर्गुण काली लड़की में मान लिया जाता है। किसी मनुष्य के शरीर का रंग कितना महत्वपूर्ण हो सकता है विशेष तौर पर लड़कियों का; कहानी में देखा जा सकता है। कथाकार आनंद बहादुर लड़की के संबंध

में लिखते हैं—“लड़की काली थी और ‘काली’ नाम से पुकारी गई, जिस बात में किसी को कोई खास ऐतराज नहीं था। यहाँ तक कि भोली-भाली लड़की तक को। इसके अलावा भी उसके बहुत से और नाम थे, जो कि उस नाम के साथ ही फाव में मिले थे। जैसे आप कोई चीज खरीदते हैं, तो दुकानदार कोई चीज साथ में अपनी ओर से दे देता है, और आप खुश हो जाते हैं, बिना समझे-बुझे कि वह यह सब किसी गहरी साजिश के तहत कर रही होगा। यहाँ मगर कोई साजिश नहीं थी, क्योंकि उसका नाम ‘काली’ पड़ गया था, इसलिये लोग उसे साथ-साथ ‘कलूटी’ भी कहने लगे। फिर वो दिन भी आया जब क्रोध के वशीभूत होकर किसी ने उसे ‘कलमुही की संज्ञा से नवाजा।”⁸

समाज में किसी व्यक्ति के गुणों के बजाय उसकी शारीरिक बनावट के आधार पर उसे विशेषणों से संबोधित करता है। काली लड़की के विवाह के लिए ठुकराई जाती हैं। विवाह एक बाजार का रूप ले लिया है, जहाँ ‘गोरा रंग’ और ‘दहेज’ प्रधान है। लेखक ने पुरुष प्रधान की उस मानसिकता को उजागर किया है जहाँ स्त्री की अपनी कोई स्वतंत्र पहचान नहीं है। लड़के वाले लड़की के काले रंग को आधार बनाकर ज्यादा दहेज की माँग करते हैं— “बाकी ई कोयला के खान से सीधे इम्पोर्टेड माल लग रहा है, खैर केतना पइसा कौड़ी देंगे, ईहो पूछिके देखिये, पंद्रह लाख से कम में तैयार होने लायक मामला नहीं लग रहा है ई त।”⁹

कहानी में सांप्रदायिक दृष्टिकोण भी है जहाँ लड़की हिन्दु और लड़का मुस्लिम धर्म का है जिनके मध्य प्रेम संबंध आज के यथार्थ ‘लव जिहाद’ से आतंकित है। लड़का और लड़की प्रेम करते हैं और विवाह बंधन में बंध कर जीवन व्यतीत करना चाहते हैं परन्तु एक दुःखद स्वप्न से यह संबंध पूर्ण नहीं हो पाता है। यह हमारे समाज के चेहरे जिसमें—रंगभेद, दहेज, जातिवाद एवं सांप्रदायिकता को उजागर करता है।

बिसात संग्रह की कहानी ‘बिसात’ में मित्रता और समूह के बीच के दिखावे को प्रस्तुत किया है। कहानी में दिखावे के संबंध हैं जो एक-दूसरे को तू-तड़ाक से पुकारते हैं। आपस में मजाक उड़ाते हैं। भुवनदा को सब ‘दा’ कहकर पुकारते हैं परन्तु उनकी अनुपस्थिति में उनके विरुद्ध बातें की जाती हैं। लेखक जब उनके समूह में सम्मिलित होता है तो उनके साथ पहले तो अच्छा व्यवहार किया जाता है; लेकिन जब लेखक उनके संस्मरणों से अच्छा संस्मरण वाचक सिद्ध होता है तब वे लोग विशेष तौर पर भुवनदा उन्हें खटकने लगते हैं और उनका व्यवहार बदल जाता है। आनंद बहादुर लिखते हैं—“पहले तो बहुत दिनों तक मैं भी इस पहलू को पकड़ नहीं पाया, और औरों की तरह उन वाक्यों, उनको सुनाने वाले की अदा, उनमें उसकी हुशियारी, इत्यादि का कायल होने का दिखावा करता हुआ खुश होकर लौटता कि वाह! क्या नायाब इंसान हैं ये लोग!”¹⁰ जब लेखक का भ्रम टूटता और दिखावे का यथार्थ उनके सामने आता है तब वे उस समूह के लिए एक बाहरी व्यक्ति ही रह जाता है।

यथार्थवाद भौतिक जगत और उसकी वस्तुओं पर आधारित है। शोषण, अत्याचार, दमन, हिंसा, दासता ऐसा यथार्थ है जो मनुष्य जीवन और सम्मान के लिए बाधा उत्पन्न करते हैं। कानून सभी मनुष्यों को शांति, प्रेम और सम्मानपूर्वक जीवन की सुविधा प्रदान करता है परन्तु राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक व आर्थिक विसंगतियों के फलस्वरूप अराजकता को बढ़ावा मिलता है जो मनुष्यों में भेदभाव को जन्म देता है। ‘फोटोग्राफर्स डिलाइट’ कहानी में आनंद बहादुर जी ने जीवन की कड़वी सच्चाई, मानवीय व्यवहार की विद्रूपता और मध्यवर्गीय जीवन के संघर्ष को स्पष्ट करती है। कहानी का पात्र ‘अक्षयवट’ चेचक के दागों के कारण सूरत रूप से ‘बदसूरत’ है। इस पर उसके साथ पढ़ने वाली लड़की नीतू उसे ‘फोटोग्राफर्स डिलाइट’ कहकर उसकी कुरूपता पर व्यंग्य करती है जो यह दर्शाता है कि कैमरे की आँख अक्सर मानवीय संवेदनाओं के बजाय दाग को विषय बनाती है।

कहानी में लेखक ने मध्यवर्गीय जीवन और पारिवारिक संघर्ष को चित्रित किया है। प्लास्टर उखड़ा हुआ, काली पड़ चुकी किवाड़े, और दब्बू—सा मरियल मकान एक साधारण मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक स्थिति को व्यक्त करता है। आनंद बहादुर लिखते हैं—“पाँच साल से अधिक हो गया पोचाड़े के। प्लास्टर एक दो जगहों पर उखड़ा हुआ है, जिसके अंदर भुरभुरा लाल रंग झाँक रहा है। सामने फाटक पर सीमेंट का नया चस्पा लगा हुआ है, और किवाड़ें काली पड़ चुकी हैं। दब्बू—सा चेचक के चेहरे वाला, छुटल्ला—सा मरियल मकान, क्लिक।”¹¹

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यथार्थवाद आधुनिक युग के वास्तविक पहलुओं पर आधारित है। आनंद बहादुर आधुनिक युग के सशक्त कथाकार हैं उनकी कहानियाँ समाज के विविध संदर्भों से जुड़ी हैं। कथाकार ने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, एवं मानवीय संबंधों के यथार्थ को अपनी कहानियों में बखूबी प्रस्तुत किया है। आज मनुष्य संवेदना विहीन और स्वहित कर्ता की छवि में उभर रहा है। उसे आम आदमी की पीड़ा, दुख, अभाव इत्यादि से कोई सरोकार नहीं। मानवीय संवेदना साँसें गिनने लगी हैं।

कथाकार आधुनिक युग की परिस्थितियों को गहराई से अनुभूत करते हैं। 'ढेला' और 'बिसात' संग्रह की कहानियाँ अलग-अलग कलेवर में एक दूसरे से भिन्न विषयों को उजागर करते हैं। आधुनिक तकनीक, शिक्षा और प्रौद्योगिकी ने मनुष्य को प्रतिस्पर्धी बना दिया है। आगे बढ़ने की होड़ में वह सामाजिक, सांस्कृतिक और मूल्यों से पिछड़ रहा है। कथाकार आनंद बहादुर की कहानियाँ वास्तविक मुद्दों को उजागर करने के साथ मनुष्य को सोचने पर मजबूर करती हैं।

संदर्भ सूची

1. बहादुर, आनंद (2020) *ढेला और अन्य कहानियाँ*. सेतु प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम अंक, पृ. 23-24।
2. वही, पृष्ठ 24।
3. वही, पृष्ठ 28।
4. वही, पृष्ठ 60।
5. वही, पृष्ठ 61।
6. वही, पृष्ठ 90।
7. वही, पृष्ठ 90।
8. बहादुर, आनंद (2021) *बिसात*. सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर, पृ. 17।
9. वही, पृष्ठ 21।
10. वही, पृष्ठ 44।
11. वही, पृष्ठ 84।
